11:08
wmd-zcoy-wvf
Girish
शब्द मंच
Dr. Prakash

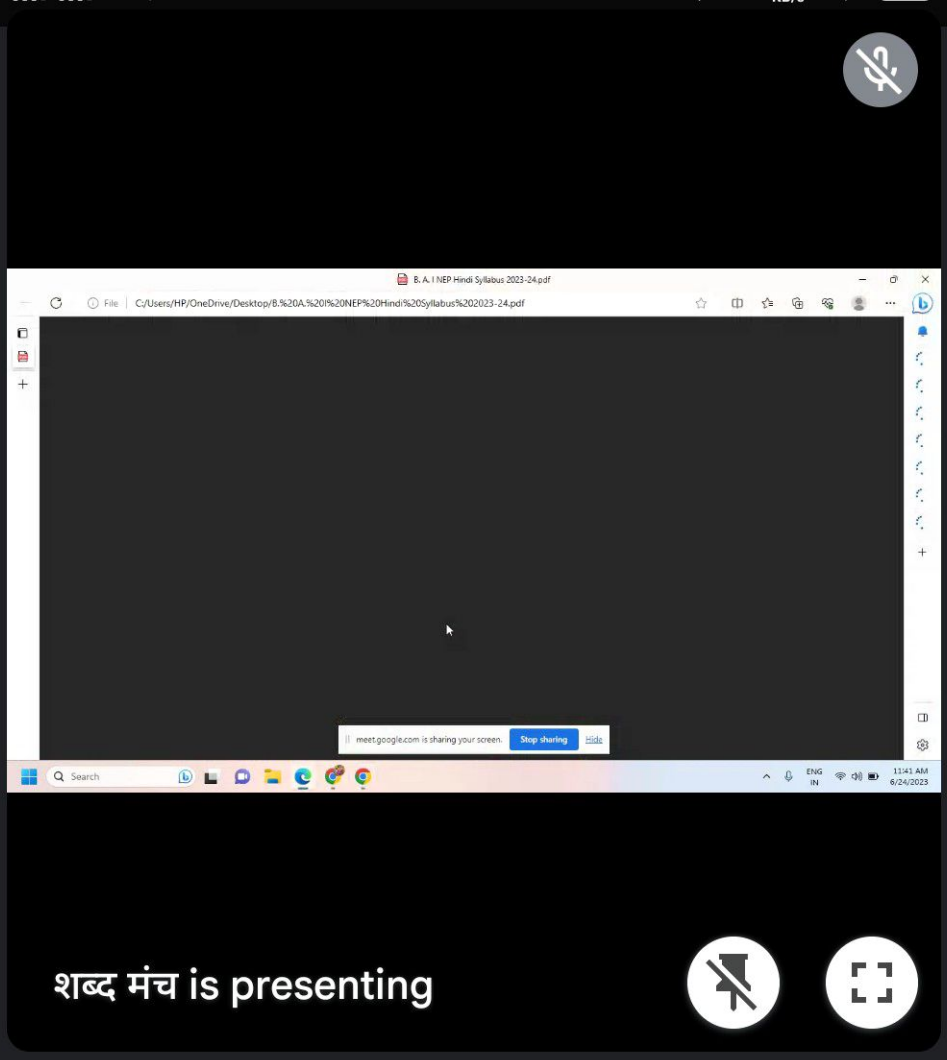
B. A. I NEP Hindi Syllabus 2023-24.pdf
C:/Users/HP/OneDrive/Desktop/B.%20A.%20I%20NEP%20Hindi%20Syllabus%202023-24.pdf
meet.google.com is sharing your screen.
Stop sharing
Hide
शब्द मंच is presenting

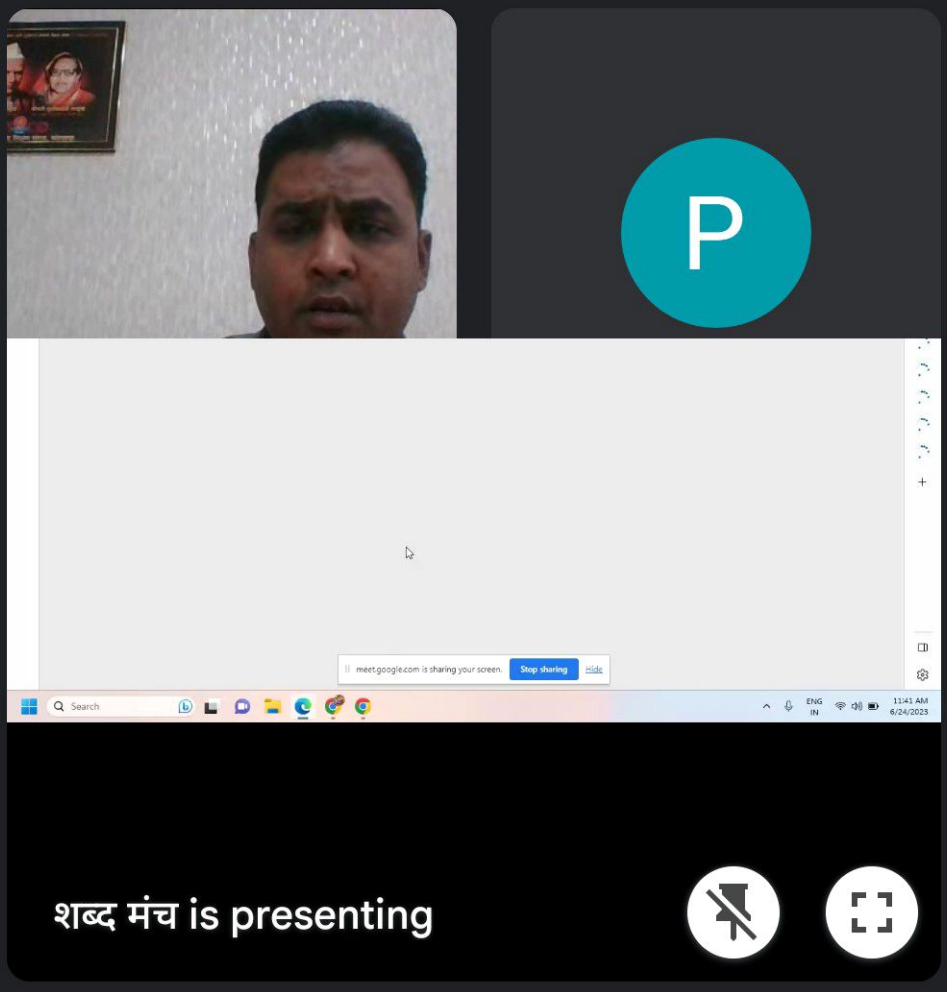
P
meet.google.com is sharing your screen.
Stop sharing
Hide
शब्द मंच is presenting

	उपन्यास – परिभाषा, तत्व, प्रकार आत्मकथा – परिभाषा और तत्व		
इकाई 3	आलोचना– स्वरूप, आलोचक के गुण आलोचना के प्रकार– सैद्धांतिक आलोचना मार्क्सवादी आलोचना संरचनावादी आलोचना सौंदर्यवादी आलोचना	15	1
इकाई 4	छंद मात्रिक छंद – दोहा छंद, सोरठा छंद, रोला छंद, चौपाई छंद। वर्णिक छंद – सवैया छंद, मालिनी छंद, मंदाक्रांता छंद, इंद्रवज्रा छंद।	15	1

प्रश्नपत्र का स्वरूप एवं अंक विभाजन :– **अंक**

प्रश्न 1 : पूरे पाठ्यक्रम पर पाँच बहुविकल्पी प्रश्न 05

प्रश्न 2 : इकाई एक और दो पर दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) 10

प्रश्न 3 : इकाई तीन और चार पर दीर्घोत्तरी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) 10

प्रश्न 4 : पूरे पाठ्यक्रम पर टिप्पणी प्रश्न (अंतर्गत विकल्प के साथ) 10

कुल अंक – 35

❖ **अंतर्गत मूल्यमापन – होम असाइनमेंट और विभागीय मूल्यमापन अंक– 15**

- **संदर्भ ग्रंथ सूची :–**

1. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र।
2. शास्त्रीय समीक्षा के सिद्धांत – डॉ. गोविंद त्रिगुणायत।
3. काव्य के रूप – बाबू गुलाबराय।
4. भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव झारी।
5. भारतीय काव्यशास्त्र – डॉ. मान्धेंद्र पाठक।
6. हिंदी आलोचना के बीज शब्द – डॉ. बच्चन सिंह।
7. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र – कृष्णदेव शर्मा।
8. औचित्य विचार चर्चा – क्षेमेंद्र।
9. रस सिद्धांत – डॉ. नगेंद्र।
10. काव्यशास्त्र भारतीय एवं पाश्चात्य – डॉ. कन्हैयालाल अवस्थी।
11. हिंदी आलोचना का सैद्धांतिक आधार – कृष्णदत्त पालीवाल।
12. काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन – डॉ. अजय प्रकाश।

हिंदी साहित्य का इतिहास

सत्र – V प्रश्नपत्र – IX

DISIPLINE SPECIFIC ELECTIVE COURSE (DSC)

(Course Code – DSC-1016 E3)

हिंदी (ऐच्छिक)

श्रेयांक – 04, तासिकाएँ – 60

(प्रस्तुत पाठ्यक्रम का निर्माण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की मॉडल पाठ्यचर्या (CBCS) के आलोक में किया गया है।)

11:49
ymq-prvs-wsp
शब्द मंच is presenting
शब्द मंच
P
Pravin
You
Dr. Pra
1 other

4G 4G 11:04
77.4 KB/s 4G 80
Close
Participants (18)
Search
डॉ. दीपक तुपे (me)
Gajanan Chavan (Host)
STOP SAYING "I WISH", START SAYING "I WILL".
Manisha keluskar
P
Poonam Bargale
AC
Anjum Chikode
AK
Ankita kamble
AK
Arati kamble
BK
Bhagyashree kallappa karan...
DB
Divya bandagar
Kranti Prakash Malakane
K
Kuber Patil
Invite

4G 4G 10:05 15.0 KB/s 4G 50

Close **Participants (7)**

	डॉ. दीपक तुपे (Host, me)	
AM	Ajinkya mali	
FK	Fija khan	
	Mrunali Kamble	
SK	Sahil kharare	
SJ	Saqlain jamadar	
SK	Shivani khopkar	

Invite Mute All •••

9:52
Close
Participants (6)
डॉ. दीपक तुपे (Host, me)
A
ASIF..CHANDSHA
SK
Sahil kharare
S
Sanika Arun Patil
1
SK
SHIVANI KHOPKAR
S
subhash rajput
Invite
Mute All

4G 4G 9:39 37.6 KB/s 4G 53

Close **Participants (6)**

डॉ. दीपक तुपे (Host, me)

AK AYUB KAJI

Mruna Kamble

Saqlain Jamadar

SK Shivani Khopkar

AM Ajinkya Mali

Invite

Mute All

•••

9:09
Close
Participants (4)
Waiting(1)
SJ
Saqlain Jamadar
Joining...
Participants(3)
डॉ. दीपक तुपे (Host, me)
AM
Ajinkya Mali
SK
Shivani Khopkar
Invite
Mute All

9:23
Close
Participants (6)
डॉ. दीपक तुपे (Host, me)
SK
Sahil kharare
S
Sanika Arun Patil
SK
SHIVANI KHOPKAR
S
subhash rajput
A
ASIF..CHANDSHA
Invite
Mute All

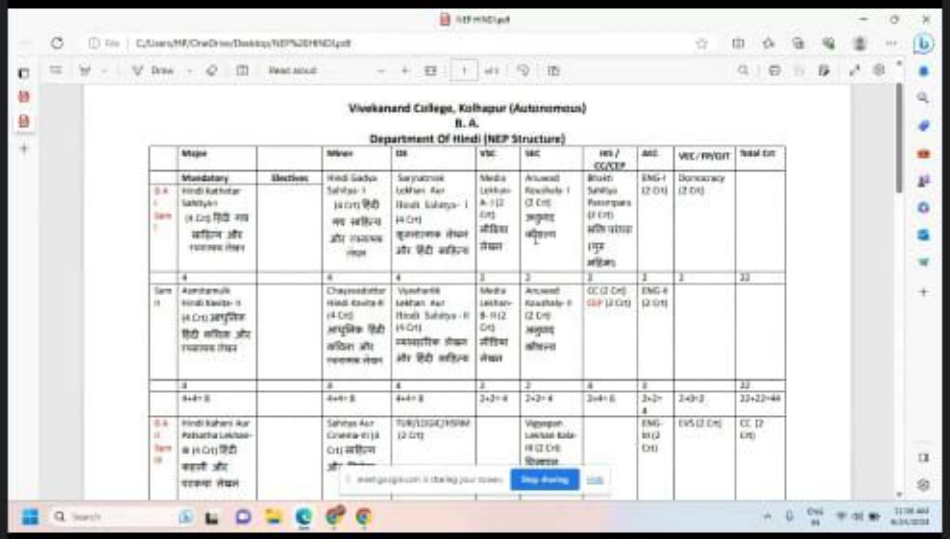

11:38
Vivekanand College, Kolhapur (Autonomous)
B. A.
Department Of Hindi (NEP Structure)
शब्द मंच is presenting
शब्द मंच is presenting

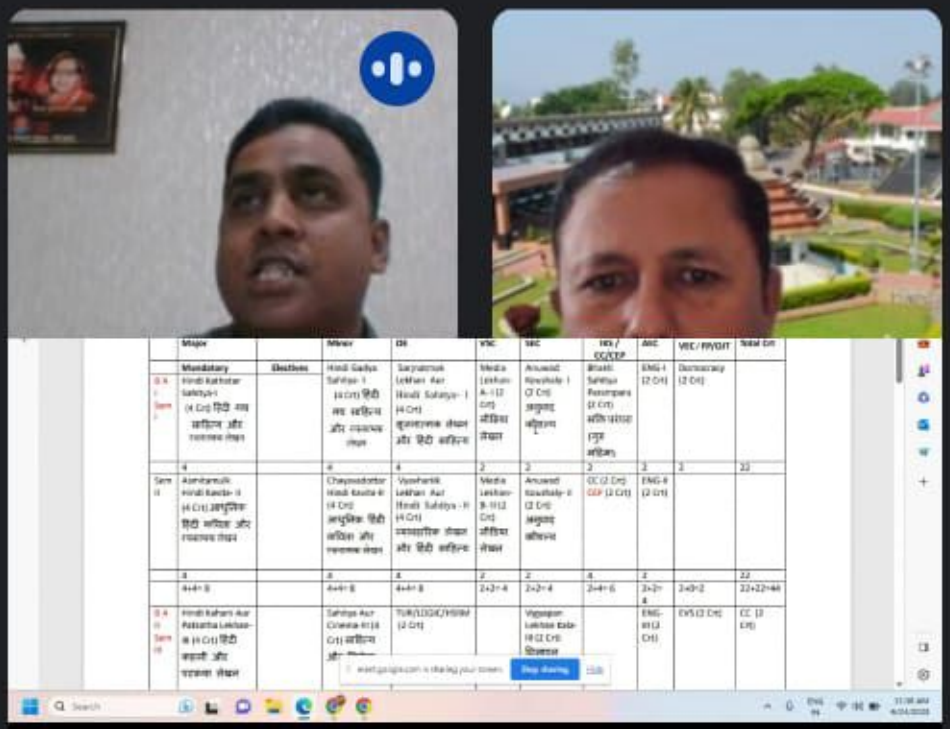

11:02
63.5 KB/s
42
REC
LIVE
Arif Mahat

11:00
48.9 KB/s
44
REC
LIVE
Arif Mahat

9:53 76

आदिकाल का नामकरण

हिन्दी साहित्य के आदिकाल के नामकरण के संबंध में विविध दृष्टिकोण हैं क्योंकि नामकरण की प्रक्रिया सामान्यत: प्रवृत्ति के आधार पर ही निर्धारित की जाती है. इस संदर्भ में आचार्य रामचंद्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा, राहुल सांकृत्यायन तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी के विचार उल्लेखनीय हैं.

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस आदिकाल को 'वीरगाथा काल' नाम दिया. उन्होंने निम्नलिखित 12 रचनाओं को आधार मानकर इस काल का नामकरण किया:

1. विजयपाल रासो
2. हम्मीर रासो
3. कीर्तिलता
4. कीर्तिपताका
5. खुमान रासो
6. बीसलदेव रासो
7. पृथ्वीराज रासो
8. जयचंद प्रकाश
9. जयमयंक जसचंद्रिका
10. परमाल रासो
11. खुसरो की पहेलियाँ
12. विद्यापति की पदावली

इस संबंध में उन्होंने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा है:

इन्हीं बारह पुस्तकों की दृष्टि से आदिकाल का लक्षण-निरूपण और नामकरण हो सकता है. इनमें से तीन विद्यापति-पदावली, खुसरो की पहेलियाँ और बीसलदेव रासो को छोड़कर शेष सब ग्रंथ वीरगाथात्मक है. अत: आदिकाल का नाम वीरगाथाकाल ही रखा जा सकता है.

1.3.2. आदिकाल की राजनीतिक परिस्थिति :

आदिकाल की राजनीतिक परिस्थिति इस प्रकार से है -

१) अव्यवस्था और पराजय का युग :

भारतीय इतिहास का यह युग राजनीति की दृष्टि से अव्यवस्था, गृह-कलह और पराजय का युग था। इस काल से भारतीय राजनीतिक जीवन के विशृंखल होने का इतिहास प्रारम्भ होता है। ईसा की सातवीं आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी के राजनीतिक घटना चक्र ने हिन्दी साहित्य को भाषा और भाव दोनों ही दृष्टियों से प्रभावित किया था। एक ओर मुसलमानों के आक्रमण पर आक्रमण हो रहे थे, तो दूसरी ओर देश के देशी राजे आपस में लड़ते रहे थे। गृह-कलह के कारण राजाओं की शक्ति नष्ट हो गई थी। उन्हें चारों ओर से पराजित होना पड़ा।

२) केंद्रीय सत्ता का ह्रास :

सम्राट हर्षवर्धन (सन् 606 से 643) के निधन के पश्चात मानों एक प्रकार से उत्तरी भारत से केंद्रीय सत्ता का ह्रास हो गया और राजसत्ता पूर्ण रूप से डाँवाडोल हो गई। 9 वीं शताब्दी में प्रतिहार मिहिर भोज ने उसे फिर समेटा तो उधर दक्षिण को राष्ट्रकूटों के साम्राज्य ने सम्भाल रखा था। उधर अरब में नवोदित इस्लाम ने अफगानिस्तान तक अपने पैर पसारे चाहे उस समय अफगानिस्तान भारत के अंतर्गत ही था। अब मुस्लिमों

ने सिंध को प्रवेशद्वार बनाया और सन् 710 - 11 में सबसे पहले मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिंध पर धावा किया। सिंध का राजा दाहिर और उसके बेटे भिन्न-भिन्न भूमि के लिए लड़े लेकिन अंत में उन्हें पराजित होना पड़ा। फिर 739 ई. में तत्कालीन अरब सेनापति ने सिंध से कच्छ, दक्षिणी मारवाड़, उज्जैन और उत्तरी गुजरात को पद्दल कर दक्षिण गुजरात में प्रवेश किया। लेकिन चालुक्य सेनापति ने अरब सेना को सिंध तक ही सीमित रखा। उस समय कश्मीर में सम्राट ललितादित्य का शक्तिशाली राज्य था।

ग्यारहवीं - बारहवीं शताब्दी में दिल्ली में तोमर, अजमेर में चौहान और कन्नौज में गहड़वाल के शक्तिशाली राज्य बने। उस समय बीसलदेव चौहान ने तोमरों से दिल्ली ले ली और हिमालय तक अपने राज्य का विस्तार किया। इस तरह तीनों आपस में लड़ते रहे उन्होंने कभी एकत्रित होकर विदेशी आक्रमणों का सामना नहीं किया। अतः एक-एक करके वे पराजित होते गये।

३) महमूद गजनवी और शहाबुद्दीन गौरी के आक्रमण :

मुसलमानों ने सिंध को प्रवेशद्वार बनाकर उत्तरी भारत पर आक्रमण करके उत्तरी भारत पर अपना कब्जा किया। उस समय देशी राजाओं में संगठन की कमजोरी और अपने राजाओं के प्रति उदासीनता होने की वजह से वे विदेशियों से हारते चले गए। 10 वीं शताब्दी के अंत में गजनी का राज्य महमूद गजनवी के हाथ में आ गया था। उसने भारत पर अनेक बार आक्रमण किए थे। जिससे उत्तरी भारत पूर्ण रूप से उध्वस्त हो चुका था। उसने अपने राज्य विस्तार के लिए सोमनाथ, कन्नौज और कालिंजर के समृद्ध मंदिरों में जमा अपार धनराशि को लूटा था। बाद में गजनी का राज्य शहाबुद्दीन गौरी के हाथ में आया। उसने पृथ्वीराज चौहान पर अनेक बार आक्रमण किए। गौरी को पृथ्वीराज से अनेक बार पराजित होना पड़ा। अंत में कन्नौज के राजा जयचन्द के षड्यंत्र के परिणामस्वरूप पृथ्वीराज मुहम्मद गौरी से पराजित हुआ और मारा गया। फिर कन्नौज और कालिंजर का भी पतन हुआ। और दिल्ली में तुर्की सल्तनत का झंडा फहराने लगा। इस तरह उत्तर भारत में मुस्लिमों की सत्ता का उदय हुआ।

1.3.1.2 आदिकाल की सामाजिक परिस्थिति

प्रत्येक युग का साहित्य अपनी युगीन परिस्थितियों की उपज होता है। इसका कारण यह है कि वे उसके निर्माण में प्रेरक तत्वों का काम देती हैं। कोई भी साहित्यकार उनसे अप्रभावित नहीं रह सकता। फलस्वरूप वे उसके साहित्य में प्रतिफलित हो उठती हैं। अतः किसी भी काल के साहित्य के वैज्ञानिक अनुशीलन के लिए तद्युगीन परिस्थितियों का ज्ञान आवश्यक है। युगीन पीठिका का निर्माण तत्कालीन राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियों से होता है। अतः हिन्दी साहित्य के अनुशीलन के लिए भी उसका ज्ञान होना जरूरी है।

सामाजिक परिस्थिति :

जिस युग में धर्म और राजनीतिक की दीन-हीन दशा हो, उस युग में उच्च सामाजिकता की आशा नहीं की जा सकती। राजनीतिक की दृष्टि से अव्यवस्था तो धर्म के नाम पर अधर्म फैला था। सामान्य जनता युद्धों में पीस रही थी। जनता आर्थिक संकट में थी।

1. जाति-व्यवस्था :

इस युग में जाति व्यवस्था के बंधन कठोर बन गये थे। अब जाति गुण और कर्म के आधार पर न होकर वर्ण के आधार पर मानी जाने लगी थी। एक जाति की अनेक उपजातियाँ होने लगी थी। छुआछूत के नियम कड़े होते गये। ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों ही उपजातियों में बँटते चले जा रहे थे। हिन्दू जाति की पाचन शक्ति का प्रायः नाश हो चुका था। हिन्दुओं को इस बात की इच्छा नहीं होती थी कि जो वस्तु एक बार भ्रष्ट हो गई है उसे शुद्ध करके फिर ले ले। उस समय बौद्ध धर्म के समान समाज भी बौद्ध ध्वस्त हो चुका था। राजपूत जाति का अभ्युदय इस काल की महान घटना है। वे 36 कुलों में बँट गये थे। ब्राह्मणों-क्षत्रियों का प्रभाव वैश्य और शूद्रों पर पड़ना अनिवार्य था, अतः वे भी और उपजातियों में विभाजित हो गए। वैश्यों ने कृषि त्याग कर वाणिज्य को प्रमुख व्यवसाय बना लिया। शूद्रों को समाज में विशेषाधिकार प्राप्त न थे। उनका जीवन पर सेवा के लिए ही था। ऊपर उठने के लिए उनके पास कोई साधन न था।

2. श्रृंखलित समाज :

आदिकाल के श्रृंखलित धर्म के समान समाज भी श्रृंखलित हो चुका था। उस युग में स्वाभिमानी वीरता और वंश-कुलीनता का बोलबाला था। राजपूत जाति वीरता और आत्मोत्सर्ग के लिए प्रसिद्ध थी। राजपूत नारियां भी पीछे नहीं थी, उस समय जौहर उनके आत्म-बलिदान और शौर्य का प्रतीक था। उस समय स्वयंवर प्रथा एक अन्य सामाजिक विशेषता थी। मुस्लिम आक्रमणों की वजह से बालविवाह और पर्दा पद्धति की प्रथा भी प्रचलित हो गई थी। राजा विलासी एवं बहुपत्नीत्व थे। इसी कारण उनके उत्तराधिकारी भी बहुपत्नीत्व थे। उस युग का समाज नैतिक मूल्यों से भ्रष्ट हो गया था।

3. राजा, सामंत और सामान्य जनता :

आदिकाल का युग राजाओं और सामंतों का युग था। उस युग के राजाओं का जीवन विलासमय था। ऐश्वर्यविभूत नृपति वर्ग का अधिकांश समय अन्तःपुर में अपनी महिषियों, उपपत्नियों तथा रखैलाओं के साथ रंगरलियों में बीतता था। राजा बहुपत्नीक थे। स्वयंवर जैसे धार्मिक कृत्यों पर खून की नदियाँ बह जाया करती थी। चारों ओर युद्धों का वातावरण था। सामान्य जनता में संतोषता की कमी थी। हिंदू समाज जन्मगत, स्थानगत, व्यवसायगत, सम्प्रदायगत और वंशगत जातियों एवं उपजातियों में बँट गया था। जिससे पारस्परिक संगठन एवं सहानुभूति का अवसर उत्पन्न नहीं हो पाता था। हर तरफ युद्धों का वातावरण था।

4. नारी के प्रति दृष्टिकोण :

इस युग में नारी की अवस्था बहुत ही विकट थी। उसके प्रति समाज में उदात्त दृष्टिकोण नहीं था। नारी को सिर्फ भोग का साधन समझा जाता था। उस युग में बालविवाह, पर्दाप्रथा, तथा सती प्रथा का भी बोलबाला था। नारी को कोई सामाजिक महत्व नहीं था। उसे सिर्फ भोग का साधन समझा जाता था। सिर्फ नारी की प्राप्ति के लिए अनेक राजाओं में युद्ध भी होते थे।